



एकीकृत कृषि प्रणाली: भारत में किसानों के लिए एक नई क्रांति

1. आकांक्षा यादव

महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर (राजस्थान)

ई-मेल: akanshayadav661@gmail.com

2. कोमल ओझा

महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर (राजस्थान)

Received: Jan, 2024; Accepted: Feb, 2024; Published: April, 2024

भारत, जो अपने अनगिनत कृषि उत्पादकों के लिए जाना जाता है, वर्तमान में एक नई क्रांति की ओर बढ़ रहा है - एकीकृत कृषि प्रणाली की क्रांति। यह प्रणाली किसानों के जीवन को सुधारने, उन्हें तकनीकी साधनों से लैस बनाने,

एकीकृत कृषि प्रणाली का मतलब

एकीकृत कृषि प्रणाली, या IFS (Integrated Farming System), एक सुचारु तथा सुसंगत कृषि प्रणाली है जो किसानों को विभिन्न क्षेत्रों में एकीकृत कृषि उत्पादन करने की संभावना

और उन्हें सुरक्षित करने का एक सामर्थ्यपूर्ण प्रयास है। इस लेख में, हम इस एकीकृत कृषि प्रणाली के उद्दीपन, काम करने की प्रक्रिया और इसके लाभों पर ध्यान केंद्रित करेंगे।

प्रदान करती है। इसमें किसान अपनी खेती के साथ-साथ पशुपालन, मछली पालन, और ऊर्जा उत्पादन का समर्थन कर सकता है। एकीकृत कृषि प्रणाली का मूल उद्देश्य भारतीय किसानों

को एक सुरक्षित, उन्नत, और अद्यतित कृषि प्रणाली में ले जाना है। इसका ध्यान एकीकृत उपायों, तकनीकी उन्नति, और अनुकूलित समाधानों की ओर मोड़ने में है। इस प्रणाली का अभिवादन केवल कृषि उत्पादकों के लिए ही नहीं, बल्कि उन सभी सांविदानिकों के लिए है जो भारतीय कृषि को सुधारने में सहायक हैं।

कैसे काम करती है एकीकृत कृषि प्रणाली

1. तकनीकी शिक्षा: एकीकृत कृषि प्रणाली का पहला स्तंभ तकनीकी शिक्षा है। किसानों को नवीनतम खेती तकनीकों, उन्नत बीज, और सुरक्षित कृषि उपायों के लिए प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है। इससे उन्हें बेहतर उत्पादता की संभावना होती है और उनका जीवनस्तर उच्च होता है।

एकीकृत कृषि प्रणाली के लाभ

- 1. विभिन्न स्रोतों से आय का संदर्भ:** एकीकृत कृषि प्रणाली के अंतर्गत, किसान अलग-अलग क्षेत्रों में उत्पादन करके विभिन्न स्रोतों से आय प्राप्त कर सकता है। इससे उसकी आर्थिक स्थिति मजबूत होती है और उसे विभिन्न संभावित हानियों से बचाव होता है।
- 2. जल संरक्षण और प्रबंधन:** एकीकृत कृषि प्रणाली में, पशुपालन, मछली पालन, और कृषि को समन्वयित रूप से प्रबंधित किया जाता है, जिससे जल संरक्षण होता है। सही प्रबंधन से पानी की बचत होती है और जलवायु परिवर्तन का समर्थन किया जा सकता है। IFIS किसानों के लिए विभिन्न आय स्रोत प्रदान करके जोखिमों को कम करने में मदद करती है। यह विविधीकरण अनियमित मौसम पैटर्न, बाजार के तरंगों और कीट प्रकोपों के साथ जुड़े जोखिमों को कम करने में मदद करता है।
- 3. ऊर्जा स्वतंत्रता:** एकीकृत कृषि प्रणाली में ऊर्जा उत्पादन की संभावना होती है, जैसे कि बायोगैस उत्पादन और ऊर्जा सहायता से कृषि उत्पादन को स्थिरता प्रदान करना।

2. आदेशिक समाधान: एकीकृत कृषि प्रणाली का दूसरा महत्वपूर्ण हिस्सा आदेशिक समाधान है। यह किसानों को बाजार से सीधे जुड़ने में सहायक है और उन्हें अधिक मूल्य प्राप्त करने में मदद करता है। इसके जरिए, किसान अपनी फसलों को निरंतर बाजारों में पहुँचा सकता है और वित्तीय रूप से सुरक्षित रह सकता है।

3. वित्तीय समर्थन: एकीकृत कृषि प्रणाली का तीसरा प्रमुख स्तंभ वित्तीय समर्थन है। इस प्रणाली से किसानों को सरकारी योजनाओं के लिए आवश्यक जानकारी प्रदान हो रही है, इससे किसान अपनी आर्थिक स्थिति को सुधारने में सहायता पा सकता है और उच्च ब्याज दरों से मुक्त हो सकता है।

इससे किसान ऊर्जा के स्रोतों के प्रति आत्मनिर्भर होता है।

- 4. विविधता और सुरक्षा:** एकीकृत कृषि प्रणाली में विभिन्न उत्पादकला के संयोजन से जैव विविधता बढ़ती है और पर्यावरण सुरक्षित रहता है। इससे फसलों के लिए और बाजारी उत्पादों के लिए सुरक्षा मिलती है, जो आने वाले समय में सुरक्षित रोजगार की स्थापना कर सकता है।
- 5. उत्पादकता में वृद्धि, समृद्धि और स्वास्थ्य:** विभिन्न खेती घटकों के बीच संबंध का परिणामस्वरूप, अक्सर कुल उत्पादकता में वृद्धि होती है। उदाहरण के लिए, पशु गोबर को फसलों के लिए उर्वरक के रूप में उपयोग करने से मिट्टी की उर्वरता में सुधार हो सकता है और कटाई को बढ़ा सकता है। एकीकृत कृषि प्रणाली में सभी क्षेत्रों के उत्पादन की सुस्त योजना और प्रबंधन से किसान को समृद्धि मिलती है। साथ ही, सकारात्मक प्रभावों के कारण किसानों की स्वास्थ्य सुधारती है और सामाजिक आर्थिक स्थिति में वृद्धि होती है।

6. **विकासशील कृषि सेक्टर:** एकीकृत कृषि प्रणाली विकासशील कृषि सेक्टर को प्रोत्साहित करती है और समृद्धि के क्षेत्र में सहयोग करती है। यह न केवल किसानों के लिए बल्कि पूरे राष्ट्र के लिए एक सुरक्षित और स्थिर खाद्य सुरक्षा की दिशा में एक पॉजिटिव प्रभाव डालती है।
7. **आजीविका में सुधार:** विभिन्न खेती गतिविधियों को मिलाने से किसानों को अतिरिक्त आय स्रोत प्राप्त होता है, जिससे उनकी सामान्य जीवनशैली में सुधार होता है। पशुपालन, मुर्गा पालन, या मत्स्यपालन को शामिल करने से घरेलू आय में महत्वपूर्ण योगदान हो सकता है।
8. **सामाजिक और आर्थिक प्रभाव:** IFS रोजगार के अवसर पैदा करके ग्रामीण विकास में योगदान कर सकती है। यह कार्यों की अधिकतम प्रदान करती है और कृषि समुदायों के कुल आर्थिक कल्याण को बढ़ावा देती है। यह स्वायत्तता को बढ़ावा देती है और बाहरी इनपुट पर निर्भरता कम करती है।
9. **स्थानीय स्थितियों के लिए अनुकूलन:** समृद्धि व्यवस्था की लचीलापन स्थानीय

स्थितियों और संसाधनों को अनुकूलित करने की अनुमति देती है। किसान आधारित तत्वों के आधार पर अपनी व्यवस्था के घटकों को अनुकूलित कर सकता है, जैसे कि जलवायु, मृदा प्रकार, और बाजार की मांगों के आधार पर।

10. **चुनौतियाँ और बाधाएँ:** हालांकि समृद्धि व्यवस्था अनेक लाभ प्रदान करती है, इसमें तकनीकी जानकारी की आवश्यकता, प्रारंभिक निवेश लागत, और पारंपरिक खेती पद्धतियों में परिवर्तन के चुनौतियाँ हैं। इन चुनौतियों को पार करने के लिए सरकारी एजेंसियों, अनुसंधान संस्थानों, और गैर सरकारी संगठनों से सहायता की आवश्यकता है।

समर्पण यह है कि समृद्धि व्यवस्था एक समृद्ध, स्थायी और सतत खेती दृष्टिकोण है जो पारंपरिक खेती पद्धतियों से उत्तराधिकारी है। IFS अभियांता को सामग्री संसाधनों का सही और पुनर्चक्रण करने का एक मार्ग प्रदान करती है, जिससे किसानों को सामृद्धि और सामाजिक आर्थिक सुधार की दिशा में कदम बढ़ाने में मदद मिल सकती है।